B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA

(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)

BA DEGREE-2

HISTORY HONS.

PAPER-3

UNIT-4(D)

DEPARTMENT OF HISTORY

PANKAJ KUMAR MISHRA

DATE-07/08/2020

TOPIC:- दिल्ली सल्तनत की उद्योग व्यवस्था का अवलोकन

PART-1

Scanned with CamScanner

दिल्ली सल्तनत की उद्योग व्यवस्था का अवलोकन

मध्यकाल में उद्योग दो प्रकार के थे - कृषि पर आधारित उद्योग तथा गैर कृषि पर आधारित उद्योग।

कृषि पर आधारित उद्योगों में कुटाई, तेल पेराई, रस्सी बटाई, इत्रिया बनाना, रेशम के कीड़े पालकर उससे रेशम निकालना, कपास से बिनौले निकालना, गुड़ अथवा शक्कर बनाना, नील बनाना, शोरे बनाना, सूत एवं रेशम की कताई करना प्रमुख थे। और कृषि आधारित उद्योगों के अंतर्गत विभिन्न धातुओं, चमड़ा, कागज, काष्ठ, शीशा, पत्थर, नमक, इत्र, तेल आदि थे। इस काल में पिंजण शब्द का उल्लेख मिलता है जिसका अभिप्राय रुई धुनिए की कमान से है। बारहवीं शताब्दी की पिण्डानुपुक्ती की टीका में जैन लेखक मलयगिरि ने जुलाहे के लिए धागा तैयार करने की विधि के संदर्भ में विभिन्न प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है। उसने लिखा है कि स्त्रियाँ पिंजण से कपास धुनकर उसे नरम बनाती थी। इसी काल में संस्कृत के शब्दकोष अभिधान चिंतामणि में भी पिंजण का उल्लेख है। रुई धुनने वाले को फारसी में मद्दाफ तथा हिंदी में धुनिया कहा जाता था। कताई का कार्य पारंपरिक विधि से, तकली जिसे फारसी में दूक कहा जाता था, से होता था। मद्दाफी रुई धुनने वालों पर लगने वाला कर था।

चीनी उद्योग - देश के विभिन्न भागों में उत्पादित गन्ने द्वारा चीनी बनाई जाती थी। सल्तनत काल में चीनी उद्योग का प्रमुख केन्द्र बंगाल था। यहाँ से देश के विभिन्न भागों में चीनी का निर्यात किया जाता था।

चमड़ा उद्योग - सल्तनत काल में चमड़ा उद्योग का भी विकास हुआ। सिंचाई के लिए पानी निकालने हेतु चमड़े की मोट, घोड़े के लिए रास व जीनें तथा तलवार रखने के लिए म्यानों आदि विभिन्न वस्तुओं की मांग के साथ चमड़ा उद्योग को बढ़ावा मिला। गुजरात में चमड़े की चटाई पर पशु-पक्षियों के चित्रों की कढ़ाई सोने, चांदी के तारों से की जाती थी।

कागज उद्योग — कागज का अविष्कार चीन में हुआ था। उसके बाद यह उद्योग मुस्लिम देशों में पहुँचा जहाँ से भारत आया। अन्य उद्योगों के साथ-साथ सल्तनत काल में कागज उद्योग का भी विकास हुआ। इस समय कागज का उपयोग शाही फरमान, विभिन्न विभागों के हिसाब, किताब तथा भूराजस्व के हिसाब-किताब में होता था। बंगाल एवं गुजरात कागज उद्योग के प्रमुख केन्द्र थे। बंगाल में पेड़ की छाल से चमकदार चिकना कागज बनाया जाता था। अमीर खुसरो ने तीन प्रकार के कागजों का उल्लेख किया है - शामी, सादा व रेशमी।

धातु उद्योग — भारत में धातु उद्योग प्राचीन काल से ही रहा है। यहाँ के लोग धातुओं को पिघलाने तथा उन्हें ढाल कर विभिन्न प्रकार के हथियार बनाने में पहले से ही प्रवीण थे। सल्तनत काल में धातु उद्योग को प्रोत्साहन मिला। दिल्ली सल्तनत के सुल्तान अपनी सैनिक साज-सज्जा की आपूर्ति के लिए इस उद्योग को प्रोत्साहित

Scanned with CamScanner

किया। इस समय लोहे की खानें ग्वालियर, कालिंजर, कुमायूँ, अजमेर व सुखेलमण्डी
में थी। अहमदाबाद, बंगाल तथा दिल्ली लौह उद्योग के प्रमुख केन्द्र थे। इसमें अहमदाबाद
अस्त्र उत्पादन का एक बड़ा केन्द्र था। लाहौर, कालिंजर, बनारस, सियालकोट, गुजरात
एवं गोलकुंडा में उत्तम श्रेणी की तलवारें बनती थी। गुजरात में जमधर, कटार, खपता
छूरा व तीर धनुष बनाए जाते थे। सियालकोट एवं बीजापुर में तोड़दार बन्दूकें बनायी
जाती थी। इस काल में सोना, चाँदी व ताँबे की खपत भी बढ़ी। इन धातुओं का उपयोग
मुख्य रूप से अभिजात वर्ग द्वारा आभूषणों के रूप में किया जाता था। बारबोसा के
अनुसार खंभात में अनेक प्रकार के कुशल स्वर्णकार रहते थे। सर्वोत्तम प्रकार के
स्वर्ण को महाकनक कहा जाता था। इसकी शुद्धता के कारण इसे बारहवन्नी की श्रेणी
में रखा जाता था। बीदर बर्तनों पर सोने चाँदी के सुन्दर जड़ाऊ काम के लिए
तथा गुजरात कलमदान एवं सुन्दर सन्दूकों के लिए प्रसिद्ध थे। बनारस ताँबा, पीतल
एवं काँसे के बर्तनों का प्रमुख केंद्र था। ताँबा अधिकतर बिहार, कुमायूँ तथा राजस्थान
की खानों से प्राप्त होता था।

Pankaj
07/08/2020

Scanned with CamScanner